प्रा. डॉ. वसन्त केशव मोरे
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
एवं
भूतपूर्व अधिष्ठाता, कलासंकाय
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
महाराष्ट्र - 416 004

- प्र मा ण प त्र -

मैं प्रमाणित करता हूँ कि सौ. शैलजा विश्वासराव पाटील ने मेरे निर्देशन में **"भीष्म साहनी का "तमस" : एक अनुशीलन"** लघुशोध-प्रबन्ध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए लिखा है। पूर्व योजनानुसार संपन्न इस कार्य में शोध छात्रा ने मेरे सुझावों का पूरी तरह से पालन किया है। जो तथ्य इसमें प्रस्तुत किये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। शोध छात्रा के कार्य से मैं सन्तुष्ट हूँ।

निर्देशक

(प्रा.डॉ. वसंत केशव मोरे)

कोल्हापुर

दिनांक : 1 / 5 /1993

- - -

- अ नु क्र म णि का -

		पृष्ठ
	भूमिका	अ - उ
प्रथम अध्याय	भीष्म साहनी : साहित्यिक परिचय : 'व्यक्तित्व और कृतित्व'	- 1 - 19
द्वितीय अध्याय	'तमस' उपन्यास का शिल्पगत अध्ययन	- 20 - 81
तृतीय अध्याय	'तमस' उपन्यास और सांप्रदायिकता	- 82 - 118
चतुर्थ अध्याय	हिन्दी के विभाजनवादी उपन्यासों में 'तमस' का स्थान	- 119 - 130
पंचम अध्याय	उपसंहार	- 131 - 138
	संदर्भ ग्रंथ सूची	- 139 - 160

- - - -

भू मि का

विषय और उद्देश्य :-

भीष्म साहनी प्रगतिशील परंपरा के शक्तिशाली साहित्यकार है। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ में साम्राज्यवाद एवं समाजवादी रचना की भूमिका स्पष्ट करने में वे कुशल हैं। 'तमस' उपन्यास में भारतीय जनता की रचना, प्राचीन संस्कृति, वर्तमान सांप्रदायिक भेद की रेखा, सांप्रदायिक भावनाओं की संकीर्णता को उन्होंने संतुलित दृष्टिकोण से अंकित कर भारत देश के सभी संप्रदायों की मूल नस्ल का एवं उनकी एकता का चित्रण यथार्थ घटनाओं के माध्यम से किया हैं।

भारत विभाजन भयंकर करूण तथा अत्याचारों की शोकान्तगाथा है। वर्तमान में इसे हम 'अंत' कह सकते हैं? यह सांप्रदायिकता अपना भयंकर रूप लेकर आज भी समाज में व्याप्त है। 'तमस' उपन्यास का शोकान्त आज भी नष्ट नहीं हुआ है। हिन्दू-मुसलमान सांप्रदायिक भेद दिन-ब-दिन जटिल होता जा रहा है। इनके पीछे अनेक बुरी शक्तियाँ सक्रिय हैं। भीष्मजी ने 'तमस' उपन्यास में जिन बातों का चित्रण किया है उससे हम प्रभावित होते हैं। सांप्रदायिक भावना व्यक्ति, समाज तथा आनेवाली पीढ़ी के लिए कितनी विनाशकारी है इन बातों को भीष्मजी ने स्पष्ट किया है। वे धर्म निरपेक्ष समाज तथा मानवताधर्म की मांग कर, संस्कारक्षम आधुनिक आदर्श भारत स्थापित करना चाहते हैं। उनके शांत, शालीन, गंभीर विचारों में साम्यवाद है। ऐसे महान कृति का अनुशीलन ही प्रस्तुत शोध-प्रबंध का विषय और उद्देश्य है।

प्रेरणा :-

भीष्म साहनी के 'तमस' उपन्यासपर शोध कार्य करने की प्रेरणा मुझे तब मिली जब मैंने टी.वी. पर 'तमस' सिरियल देखी। इस सिरियल से मैं प्रभावित जरूर हुई थी किन्तु उसे सक्रिय रूप शोध निर्देशक श्रध्देय डॉ. मोरे जी ने दिया। जिस समाज में हम रहते हैं वह समाज कैसा है? उनमें जाति भिन्नता कैसी हैं? उनमें कौन कौन सी विचार धाराएँ हैं? इसमें राजनीति की भूमिका कौन सी है? यह देखना, परखना हमारा कर्तव्य हैं ऐसा मैं मानती हूँ और इसी दृष्टिकोण से लेकर मैंने प्रस्तुत लघु-

शोध प्रबंध को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। राष्ट्र की आन्तरिक शांति ही एकता का मूलाधार है। उस शांति का चिंतन करते समय यह न भूलना चाहिए कि राष्ट्रीय अशांति के क्या कारण है?

इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्नांकित प्रश्न थे -

1. किन संस्कारों में भीष्म साहनी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व उभर उठा? इसमें परिवेश का योगदान कौनसा था?
2. सांप्रदायिक भेद भाव स्पष्ट करने के पीछे उनका मूल उद्देश्य कौनसा था?
3. भारतीय जनता की रचना कैसे हुयी है? यहाँ के मूल निवासी कौन है?
4. भारतीय संस्कृति का मूल आधार क्या है? धर्म की आवश्यकता क्यों है?
5. हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई धर्मों की विशेषताएँ कौनसी हैं?
6. भारत विभाजन और अविचारों के परिणाम और उससे उत्पन्न विकृतियाँ कौन सी हैं?
7. सांप्रदायिकता भड़काने के कारण कौन से हैं? राजनीतिक भूमिका कौनसी है? धार्मिक संगठनों की भूमिका कौन सी हैं?
8. भीष्म साहनी के "तमस" का प्रस्तुति शिल्प कैसा है? और उसका विभाजनवादी उपन्यासों में क्या स्थान है?

उपर्युक्त प्रश्नों का समाधान ढूँढने का प्रयास मैंने निम्न अध्यायों में विभाजित कर विनम्र भाव से किया है -

प्रथम अध्याय :-

प्रथम अध्याय में मैंने भीष्मजी के "व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय, उनपर हुए संस्कार, परिवेश, परिवार, सत्-संगत, अनुभव, अनुभूति के दृष्टिकोण से दिया है। उपन्यासकार ने सांप्रदायिकता और विभाजन से जुड़े जीवन सत्य को उद्घाटित किया है। यह सांप्रदायिकता हमारा इतिहास नही तो वर्तमान है। जो भीष्मजी की साहित्यसृजन की मूल प्रेरणा है। इस अध्याय में मैंने उनका परिवार, बचपन, शिक्षा, व्यावसाय, नौकरी, मित्र, गुरू, शौक, आदतें, व्यक्तित्व, उनके समकालीन साहित्यकारों की दृष्टि से उनका व्यक्तित्व, भीष्मजी की साहित्य सृजन प्रेरणा, साहित्य कृतियाँ, मान सम्मान, पुरस्कार आदि बातों को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

द्वितीय अध्याय :-

द्वितीय अध्याय में भीष्म साहनी के "तमस" उपन्यास का तत्वों के आधारपर तात्विक विवेचन किया है। कथानक की घटना प्रधानता, पात्रों का प्रतिनिधित्व, तथा उनका व्यक्तित्व, संवादों की उपयुक्तता, सार्थकता तथा व्यंग्यात्मकता, भाषा शैली का सौष्ठव, देशकाल वातावरण की यथार्थता, उद्देश्य

की सफलता का परिचय दिया है। और निष्कर्ष रूप में उनका महत्व स्पष्ट किया है।

तृतीय अध्याय :-

इस अध्याय में सांप्रदायिकता की संकल्पना और उस से धर्म का संबंध स्पष्ट किया है। भारतीय जनता की रचना, नस्ल, शरीर-रचना, रंग-रूप, भाषा की विविधता, संस्कृति, हिन्दू-मुसलमान, सिक्ख, ईसाई धर्मोंका परिचय, शिक्षा, धर्म युध्द की आवश्यकता, हिन्दुओं की कमजोरी, काँग्रेस एवं राजनीतिक पार्टियों का परिचय, हिन्दू-मुसलमान भेदभाव, अंग्रेजों का आगमन, समाज परिवर्तन, भारत-विभाजन, अविचारों की आंधी का स्पष्टीकरण कर "तमस" के साथ उसका संबंध स्पष्ट किया है। तमस में ऐतिहासिक संदर्भ में शिवाजी तथा राणा प्रताप की धार्मिकता एवं निर्भिकता का भी परिचय दिया है।

चतुर्थ अध्याय :-

इसमें विभाजनवादी उपन्यासों में "तमस" का स्थान स्पष्ट करते हुए, विभाजन युगीन समस्याएँ और उपन्यास, जिसमें यशपाल का "झूठा सच", गुरूदत्त का "देश की हत्या", रामानंद सागर का "और इन्सान मर गया", कमलेश्वर का "लौटे हुए मुसाफिर" और "तमस" का संक्षेप में तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। "तमस" की त्रुटियों का विवेचन भी किया है।

उपसंहार :-

उपसंहार में संपूर्ण अध्ययन का संक्षेप में सारांश बताकर भीष्मजी ने इतिहास और वर्तमान जीवन सत्य को यथार्थ के धरातलपर "तमस" उपन्यास का निर्माण किया है, यह बात स्पष्ट की है। सांप्रदायिकता मजहबी एवं सांस्कृतिकता नही है। मानसिक और बौध्दिक समन्वय के लिए व्यक्ति तथा समाज के लिए धर्म की आवश्यकता है और वह धर्म है "मानवता"। "तमस" उपन्यास शांति की माँग करता है और शांति तब मिलती है जब मानव में विश्वबंधुत्व, उदात्तता तथा समता की भावना निर्माण होती है।

उपलब्धियाँ :-

1. भीष्म साहनी महान लेखक है। उनकी रचनाओं में व्यापक जन-समुदाय का जीवन दर्शन मिलता है। यह जीवन दर्शन व्यक्ति से समाज, समाज से देश, देश से विश्वबंधुत्व को व्याप्त करता है। वे युग की सच्चाई स्पष्ट करने में सफल हुए हैं। यह युग कभी भी न मिटनेवाला है। उस युग का कडुवा सत्य भीष्मजी ने "तमस" में चित्रित किया है, वही वर्तमान सत्य भी बन गया है।
2. भीष्म साहनी जी ने सांप्रदायिकता के भीषण परिणामों को व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनीतिक प्रतिक्रियाओं के माध्यम से स्पष्ट किया है। इसमें यथार्थ ज्यादा और कल्पना न के बराबर है।

इसमें किसी भी प्रकार का सिध्दान्त तथा वाद-विवाद नहीं है। केवल इमानदारी है। भारत विभाजन तथा युगीन परिवेश का सजीव चित्रण "तमस" में है। जो मानव मूल्य और संघर्ष को चित्रित करता है।

3. साहित्यकार अपनी रचनाओं में जिन समस्याओं का चित्रण करता है वह उसकी अनुभूति होती है। अपने संस्कार और परिवेश का इसमें बड़ा योगदान रहता है। जिस समाज में वह रहता है, समाज कैसा है? उसकी धारणाएँ क्या है? विचार परंपरा, रीति, नीति, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्थिति क्या है? उससे वह परिचित होता है और उसे अपनी रचनाओं के माध्यम से स्पष्ट करता है। समाज में जीवन व्यतीत करते समय कौनसी बातें महत्वपूर्ण और उपयोगी है? इन बातों को भीष्मजी ने "तमस" उपन्यास के द्वारा प्रभावपूर्ण ढंग से स्पष्ट करने की कोशिश कर समाज के लिए शांति, समन्वय, मानवधर्म की आवश्यकता प्रतिपादित की है।

4. "तमस" का कथानक घटना प्रधान है। इसकी घटनाएँ बिखरी-बिखरी हैं लेकिन सांप्रदायिकता, धार्मिकता के परिणामों को प्रभावी तथा मार्मिक बनाने के लिए बहुत ही सशक्त बनी हुयी हैं। समाज में भिन्न भिन्न प्रकृति, धर्म, संप्रदाय के लोग होते हैं, उनका प्रतिनिधित्व स्पष्ट करने के लिए लेखक ने कुशलता से पात्रों का चुनाव किया है। वातावरण की निर्मिती तो बेमिसाल है। उद्देश्य की सफलता तो इस उपन्यास की खास विशेषता है। जिससे हम कह सकते हैं कि "तमस" जीवन का यथार्थ सत्य है और हमारे जीवन के निकट है। अंधेरे में प्रकाश किरणों का शोध यह उपन्यास करता है। क्योंकि भारत विभाजन के बाद भी हिन्दू-मुसलमान समस्या मौजूद है। आज भारत के लिए सब से महत्वपूर्ण बात है "राष्ट्रीय एकात्मता"। "तमस" में जरनैल पात्र इसी आदर्श को लेकर चलनेवाला पात्र है लेकिन सभी उसे सनकी और पागल समझते हैं। उसकी स्थिति का विडम्बनापूर्ण चित्रण भीष्मजी ने किया है। जरनैल की जो शोकान्तिका है, वही सच्चे राष्ट्रभक्तों की भी है। जरनैल यह पात्र उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है, जो किसी श्रेष्ठ निष्ठा, आदर्श के लिए जीते हैं और उनकी पूर्ति के लिए जीवन का बलिदान देते हैं। उनकी धारणा प्रमुख रूप में शांति, मैत्री, बंधुत्व, एकता की होती है। अन्य पात्रों में राजो की मानवीयता भी प्रशंसनीय है। मुरादअली की देशद्रोही वृत्ति का व्यंग्यात्मक चित्रण समाज का तथा विनाशालीला का कारण बनी है।

5. वातावरण का यथार्थ मार्मिक, हृदयाग्राही, बीभत्स चित्रण ही "तमस" की सफलता है। आगजनी, खून, मारकाट, अत्याचार की घटनाओं से कथानक भरा-पूरा है। इनमें सामाजिक, धार्मिक,

राजनीतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक, आर्थिक, पारिवारिक, मानसिक वातावरण का संकेतात्मक लेकिन प्रभावपूर्ण चित्रण हुआ है। पात्रों का व्यक्तित्व, वातावरण की गंभीरता, समाज का व्यंग्य स्पष्ट करनेवाली भाषा शैली भी सुंदर है। जिससे उपन्यासकार उद्देश्य की पूर्ति में सफल हुआ है।

अध्ययन की नई दिशाएँ :-

1. भीष्म साहनी के उपन्यासों का शिल्प विधान।
2. भीष्म साहनी के "तमस" उपन्यास में चित्रित सांप्रदायिकता।
3. भीष्म साहनी का "तमस" और यशपाल का "झूठा-सच" इन दो उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन।
4. भीष्म साहनी के उपन्यास साहित्य का अनुशीलन।
5. भीष्म साहनी के उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग का चित्रण।
6. भीष्म साहनी की कहानियों का अनुशीलन।
7. भीष्म साहनी के नाट्य साहित्य का अनुशीलन।

- - -

ऋण निर्देश :-

मेरे इस लघु शोध प्रबंध को पूर्ण करने में कई महानुभावों का प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष सहयोग मुझे मिला है। उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना नैतिक दायित्व समझती हूँ। किसी भी विषयपर समीक्षात्मक अध्ययन करना सरल बात नही है। वैसे तो यह कठिन कार्य है। "तमस" यह सांप्रदायिक उपन्यास है। और सांप्रदायिक समस्या बहुत नाजूक समस्या है। उसके विविधांगी पक्षों को देखने के लिए, अध्ययन करने के लिए मेरे गुरूवर्य श्रध्देय डॉ. व्ही.के. मोरेजी, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग एवं भूतपूर्व अधिष्ठाता, कला संकाय, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर ने अनमोल मार्गदर्शन किया है। आप के सहयोग के बिना यह कार्य संपन्न होने की कल्पना ही नहीं की जा सकती। प्रस्तुत शोध-प्रबंध आपही के सुयोग्य निर्देशन का परिणाम है। आप के इस अनुग्रह से उऋण होना मेरे लिए असंभव है।

डॉ. पी.एस. पाटील अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, एस.जी.एम्. कॉलेज, कराड के निरंतर प्रोत्साहन, प्रेरणा तथा सहयोग से मेरा कार्य अत्यंत प्रभावशाली और सरल हुआ है, उनकी मैं ऋणी हूँ। इसके साथ शिवाजी विश्वविद्यालय का ग्रंथालय, महिला महाविद्यालय, कराड का ग्रंथालय, एस.जी.एम्. कॉलेज के ग्रंथालय के सहयोग को मैं कभी नही भूल सकती। इन ग्रंथालयों के ग्रंथपाल एवं संबंधित सभी कर्मचारियों की तथा पी.जी. विभाग के सभी कर्मचारियों की मैं आभारी हूँ। हमारे प्राचार्य श्रध्देय डिसूझा साहब, शिवाजी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के सदस्य, सौ मोरेजी, सौ पाटीलजी के साथ ही मेरे मित्र परिवार ने भी मेरी मदद की उनके प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ। मेरे पति श्री. रमेश, बेटी चि. शरयू, पूज्य माता एवं सास-ससूर जी, के साथ अन्य परिवार के सदस्यों की प्रेरणा तथा उनका पर्याप्त सहयोग रहा है, जिसके बिना सांसारिक जीवन का पालन करते हुए यह प्रबंध पूरा करना मुश्किल ही नहीं, असंभव हो जाता। उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करना कृतघ्नता होगी। टंकलेखन का कार्य सुंदर बनानेवाली ज्योति इलेक्ट्रानिक्स टाईपरायटींग कराड की सौ. नादिडकरजी तथा सभी के प्रति जिन्होंने मुझे इस कार्य की पूर्ति में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष सहयोग दिया है, उन सभी के प्रति मैं आभारी हूँ।

शोध छात्रा
(सौ. वि. पाटील)

- - -